पुराने वृक्षों से तैयार बेलनों से की जाती है पक्षाघात की चिकित्सा

* छत्तीसगढ़ का अनूठा पारंपरिक ज्ञान
* 105 वनौषधियों का पारंपरिक उपयोग

छत्तीसगढ़ में वनौषधियों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण मे जुटे हुऐ वनौषधि विशेषज्ञ पंकज अवधिया ने खुलासा किया है कि राज्य मे पुराने वृक्षों की लकड़ियों विशेषकर मज्जा से तैयार बेलनों की सहायता से पक्षाघात के रोगियों की चिकित्सा की जाती है। राज्य मे 105 प्रकार की वनौषधियों का प्रयोग आंतरिक और बाहरी तौर पर होता है। सर्वेक्षणों के माध्यम से अब तक 130 विशेषज्ञ पारंपरिक चिकित्सकों की पहचान हो चुकी है।

छत्तीसगढ़ के विभिन भागों मे पिछले दस वर्षों से किये जा रहे इथनोबॉटेनिकल सर्वेक्षणों के हवाले से वनौषधि विशेषज्ञ पंकज अवधिया ने बताया कि 105 प्रकार की वनौषधियों से तैयार 200 से भी अधिक प्रकार के औषधीय तेल राज्य मे लोकप्रिय है। इन तेलों को विशेष विधियों से बनाया जाता है। इन तेलो को पारंपरिक चिकित्सक स्वयं तैयार करते है। इन तेलों की मालिश अल्पमात्रा में प्रभावित अंगों पर की जाती है। कैसे मालिश करने से अधिकतम लाभ हो? इसकी जानकारी गुप्त जानकारी के रुप मे पारंपरिक चिकित्सकों के पास होती है। छत्तीसगढ़ के औषधीय तेल पूरे देश मे लोकप्रिय हो रहे है। राज्य के पारंपरिक चिकित्सक पुराने वृक्षों की तलाश घने वनों मे करते है और विशेष दिन मज्जा एकत्रित कर बेलन तैयार करते है। इन बेलनों को विशेष तरीके से प्रभावित अंगों पर चलाया जाता है। महुआ से तैयार बेलन राज्य के पारंपरिक चिकित्सकों के बीच लोकप्रिय है। वनौषधियों के अलावा औषधीय कीटों और मकाडों के प्रयोग मे भी पारंपरिक चिकित्सक दक्ष है। पक्षाघात के लिये बीरबहुटी नामक औषधीय मकोड़ों का आंतरिक सेवन लाभप्रद माना जाता है। इस जीव को तेल मे उबालकर विशेष तेल तैयार किया जाता है और फिर इस तेल से मालिश की जाती है। पारंपरिक चिकित्सक वर्षा ऋतु मे बड़ी मेहनत से इस जीन को एकत्र करते है और वर्षभर सिका प्रयोग करते है। दक्षिण छत्तीसगढ़ के पारंपरिक चिकित्सक रोगियों को विशेष वृक्षों के नीचे विश्राम करने की सलाह देते है। यह सहायक उपचार के रुप में उपयोगी होता है। राजनांदगांव क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक पडरी नामक वृक्षों की छांव से प्रभावित व्यक्तियों को बचने की सलाह देते है। छत्तीसगढ़ के मैदानी भागों मे विभिन्न जंगली पक्षियों के रक्त का प्रयोग पारंपरिक चिकित्सकों के अलावा आम निवासियों मे भी प्रचलित है। दक्षिण छत्तीसगढ़ के चिकित्सक कुचला और अफीम के मिश्रण की सहायता से सभी प्रकार के पक्षाघात की चिकित्सा का दावा करते है।

पंकज अवधिया ने आगे बताया कि पक्षाघात की चिकित्सा मे राज्य का पारंपरिक ज्ञान इस मायने मे अनूठा है कि इस तरह के ज्ञान का वर्णन दुनिया भर के संदर्भ साहित्यों में नही मिलता है। 200 से भी अधिक प्रकार के औषधीय तेल आधुनिक शोध के विषय हो सकते है। इनका व्यवसायिकीकरण कर न केवल राज्य सरकार अतिरिक्त मुद्रा अर्जित कर सकती है बल्कि विशेषज्ञ पारंपरिक चिकित्सकों को लाभान्वित भी कर सकती है।